MICRO ECONOMICS

एन0सी0आर0टी0 पाठ्यपुस्तक के आधार पर अभ्यास के प्रश्न

व्यष्टि अर्थशास्त्र

कक्षा – 12

अध्याय – 2

उपभोक्ता के व्यवहार का सिद्धान्त

IMPORTANTS NOTES

Created by

Mr. Pradeep Negi (Lecturer-Economics)
Govt. Inter College BHEL Hardwar
Uttrakhand India

आवश्यक दिशा निर्देश

- उपरोक्त नोट्स एन0सी0आर0टी0 पाठ्यपुस्तक के आधार पर तैयार किये गये है। जिसमें अतिलधु, लधु और विस्तृत उत्तरीय प्रश्नों को बहुत सरल भाषा में समझाया गया है।

- इसके साथ नोट्स के अंत में विद्यार्थियों को एक क्रियात्मक कार्य का लिंक दिया जा रहा है। इस लिंक पर विद्यार्थी अपना स्वंय का मूल्यॉकन कर सकते है।

- नोट्स के अंत में अध्याय से संबन्धित वीडियो का भी लिंक दिया गया जिससे आप विषय वस्तु को ठीक से समझ सके।

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्र01 उपयोगिता से क्या आशय है ?

उ0 उपयोगिता किसी वस्तु की वह क्षमता है जिससे किसी मानवीय आवश्यकता की सन्तुष्टि होती है।

प्र02 बजट रेखा क्या है?

उ0 बजट रेखा एक ऐसी रेखा है जो उन समूहों का प्रतिनिधित्व करती है जिनकी लागत उपभोक्ताओं की सम्पूर्ण लागत के बराबर होती है।

प्र03 बजट रेखा का समीकरण क्या है ?

उ0 $P_1x_1 + P_2x_2 = M$ (P_1 = वस्तु 1 की कीमत, P_2 = वस्तु 2 की कीमत, x_1 = वस्तु 1 की मात्रा, x_2 = वस्तु 2 की मात्रा, M = उपभोक्ता की आय)

प्र04 बजट रेखा के ढलान मापने का सूत्र क्या है ?

उ0 $= \frac{P_1}{P_2}$

अतिलधु उत्तरीय प्रश्न

प्र05 सामान्य वस्तुओं से क्या आशय है ?

उ0 वे वस्तुएँ जिनकी माँग उपभोक्ता की आय बढ़ने पर बढ़ती है और आय कम होन पर धटती है उसे सामान्य वस्तुएँ कहते है।

प्र06 बजट समूह कब बदलता है?

उ0 जब किसी वस्तु की कीमत और उपभोक्त की आय में परिवर्तन होता है।

प्र07 प्रतिस्थापन की सीमान्त दर क्या है ?

उ0 प्रतिस्थापन की सीमान्त दर वह दर ळे जिस पा एक उपभोक्ता वस्तु 1 के स्थान पर वस्तु 2 का प्रतिस्थापन करता है और उसके प्रति उदासीन रहता है।

प्र08 माँग के विस्तार से क्या अभिप्राय है ?

उ0 अन्य बातें समान रहने पर, जब किसी वस्तु की कीमत में कमी होने पर उसकी माँग में वृद्धि हो जाती है तो उसे माँग का विस्तार कहते है।

अतिलधु उत्तरीय प्रश्न

प्र09 माँग के संकुचन से क्या अभिप्राय है ?

उ0 अन्य बातें समान रहने पर, जब किसी वस्तु की कीमत में वृद्धि होने से उसकी माँग में जो कमी आती है उसे माँग का संकुचन कहते है।

प्र010 व्युत्पन्न माँग किसे कहते है ?

उ0 जब वस्तुओं और सेवाओं की माँग आगे उत्पादन के लिए की जाती है तो उसे व्युत्पन्न माँग कहते है।

प्र011 संयुक्त माँग किसे कहते है ?

उ0 जब एक आवश्यकता को पूरा करने के लिए अनेक वस्तुओं की माँग एक साथ की जाती है तो उसे संयुक्त माँग कहते है। जैसे धर बनाने के लिए ईट, सीमेंट रेत आदि।

प्र012 गिफिन पदार्थ से क्या अभिप्राय है ?

उ0 गिफिन पदार्थ वे धटिया पदार्थ है जिनका आय प्रभाव ऋणात्मक तथा कीमत प्रभाव धनात्मक होता है।

अतिलधु उत्तरीय प्रश्न

प्र013 धटिया वस्तुओं से क्या अभिप्राय है ?

उ0 धटिया वस्तुएँ वे वस्तुएँ होती हैं जिनकी माँग आय बढ़ने पर कम तथा आय कम होने पर बढ़ जाती है।

प्र014 माँग तालिका किसे कहते है ?

उ0 किसी निश्चित समय पर वस्तु की विभिन्न कीमतों एवं उन कीमतों पर माँगी जाने वाली वस्तु की मात्राओं के पारस्परिक सम्बन्धों को बताने वाली तालिका माँग तालिका कहलाती है।

प्र015 सीमान्त उपयोगिता क्या है ?

उ0 जब वस्तु की दी हुई मात्रा की सीमान्त उपयोगिता कुल उपयोगिता में होने वाली वह वृद्धि है जो उसके उपयोग में एक इकाई के बढ़ने के परिणामस्वरूप प्राप्त होती है।

प्र015 सीमान्त उपयोगिता के शून्य होने पर कुल उपयोगिता में क्या होता है ?

उ0 सीमान्त उपयोगिता के शून्य होने पर कुल उपयोगिता में वृद्वि या अधिकतम होती है।

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्र01 माँग के नियम को स्पष्ट कीजिए ? माँग वक्र बाएँ से दाएँ नीचे की ओर क्यों गिरता है ?

माँग का नियम यह बताता है कि किसी वस्तु की कीमत में वृद्धि होने से उसकी माँग कम हो जाती है तथा कीमत में कमी होने से माँग बढ़ जाती है। इस प्रकार वस्तु के मूल्य एवं उसकी माँग के मध्य विपरीत सम्बन्ध पाया जाता है।

अभ्यास के प्रश्न

माँग का नियम की परिभाषाएँ।

प्रो0 मार्शल के अनुसार – "गिरते हुए मूल्य के साथ–साथ माँग की मात्रा बढ़ती जाती है तथा बढ़ते हुए मूल्य के साथ–साथ माँग की मात्रा धटती जाती है।"

माँग का नियम की विशेषताएँ

1. यह नियम अन्य बातें समान रहने पर ही क्रियाशील रहता है।
2. कीमत और माँग में विपरीत सम्बन्ध पाया जाता है।
3. यह परिमाणात्मक कथन न होकर गुणात्मक कथन है।

माँग का नियम की व्याख्या।

माना किसी बाजार में किसी विशेष समय में किसी एक उपभोक्ता की विभिन्न कीमतों पर सन्तरे की माँग निम्न तालिका के अनुसार है।

केले की माँग तालिका

केले की कीमत (प्रति दर्जन) रू0 में	केले की माँग (दर्जन में)
1	50
2	40
3	30
4	20
5	10

तालिका से स्पष्ट है कि जब केले की कीमत रू0 1 है तो उसकी माँग 50 दर्जन है। अगर कीमत रू0 1 से बढ़कर 4 या 5 रूपये हो जाती है तो माँग धटकर रू0 20 या 10 दर्जन रह जाती है।

अतः स्पष्ट है कि जब वस्तु की कीमत में वृद्धि होती है तो उसकी माँग कम हो जाती है और जब वस्तु की कीमत में कम होती है तो उसकी माँग बढ़ जाती है।

अभ्यास के प्रश्न

रेखाचित्र द्वारा व्याख्या–

रेखाचित्र में अक्ष OX पर सन्तरे की माँग और अक्ष OY पर सन्तरे की कीमत दिखाई गई है। माँग वक्र बताता है कि जैसे–जैसे कीमत धटती जाती है, वैसे–वैसे माँग की मात्रा बढ़ती जाती है और कीमत बढ़ने पर माँग की मात्रा धट जाती है।

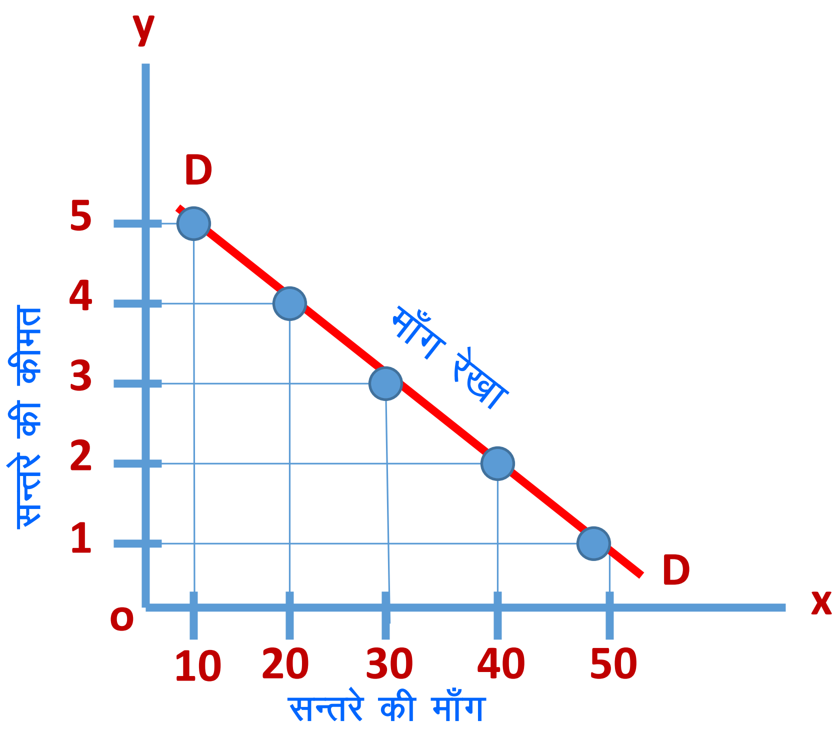

सन्तरे की माँग तालिका

सन्तरे की कीमत (प्रति दर्जन) रू0 में	सन्तरे की माँग (दर्जन में)
1	50
2	40
3	30
4	20
5	10

माँग के नियम की क्रियाशीलता के कारण –

1. **सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम की क्रियाशीलता के कारण** – माँग का नियम सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम पर आधारित है। सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम हमें बताता है कि जैसे–जैसे किसी वस्तु की एक से अधिक इकाइयों का उपभोग किया जाता है, तो उपभोक्ता को मिलने वाली सीमान्त उपयोगिता कम होती चली जाती है।
2. **प्रतिस्थापन प्रभाव** – जब किसी वस्तु की कीमत में कमी होती है तो इसका अर्थ है कि वह वस्तु अपनी स्थानापन्न वस्तुओं की तुलना में सस्ती हो गई है। उपभोक्ता महँगी वाली वस्तु के स्थान पर कम कीमत वाली उसे मिलती–जुलती वस्तु क्रय करेगा। जैसे यदि चाय और कॉफी में, कॉफी की कीमत कम होने और चाय की कीमत में कोई परिवर्तन न हाने पर उपभोक्ता कॉफी की माँग अधिक करेगा।
3. **आय प्रभाव** – वस्तु की कीमत कम हो जाने पर उपभोक्ता की वास्तविक आय में वृद्धि हो जाती है। जिसके फलस्वरूप उसकी आय में बचत होती है। इस अतिरिक्त आय से वह और अधिक मात्रा में वस्तुओं का क्रय कर सकता है। और वस्तु का मूल्य अधिक होने से वह वस्तूओं की कम मात्रा क्रय करेगा।
4. **वस्तु के विभिन्न उपयोग** – कुछ वस्तुओं के अनेक प्रयोग होते है जैसे दूध, बिजली आदि। ऐसी वस्तुओं की जब कीमत बढ़ जाती है तो उनका प्रयोग केवल महत्तपूर्ण कार्यो में किया जाता है जिससे उनकी माँग धट जाती है। इसके विपरीत इनकी कीमत कम होने पर इनकी माँग बढ़ जाती है।

प्र02 माँग के नियम को स्पष्ट कीजिए ? माँग का नियम गुणात्मक कथन है या परिमाणात्मक कथन ?

माँग का नियम यह बताता है कि किसी वस्तु की कीमत में वृद्धि होने से उसकी माँग कम हो जाती है तथा कीमत में कमी होने से माँग बढ़ जाती है। इस प्रकार वस्तु के मूल्य एवं उसकी माँग के मध्य विपरीत सम्बन्ध पाया जाता है।

माँग के नियम एक **गुणात्मक कथन है** परिमाणात्मक नहीं क्यों की यह नियम केवल इस बात की व्याख्या करता है कि मूल्य के बढ़ने पर माँग में कमी होने की प्रवृत्ति पायी जाती है, जबकि मूल्य के कम होने पर माँग में बढ़ने की प्रवृत्ति पायी जाती है।

****

अभ्यास के प्रश्न

प्र03 माँग की मूल्य सापेक्षता (कीमत लोच) क्या होती है ? यह कितने प्रकार की होती है ? रेखाचित्रों की सहायता से समझाइए।

"माँग की लोच किसी वस्तु की कीमत में परिवर्तन के सापेक्ष उसकी माँग में परिवर्तित हुई मात्रा को बताती है। अर्थात् कीमत तथा माँग में विपरित संबध होता है।"

माँग की लोच की अन्य परिभाषा –

प्रो0 बोलिंडग के अनुसार – "किसी वस्तु की कीमत में एक प्रतिशत परिवर्तन होने से वस्तु की माँग में जो परिवर्तन होता है, उसे माँग की लोच कहते है।"

अभ्यास के प्रश्न

माँग की लोच की 5 श्रेणियाँ होती है।

माँग की लोच की 5 श्रेणियाँ होती है।

1. पूर्णतया लोचदार माँग (ed = ∞)
2. अधिक लोचदार माँग (ed >1)
3. इकाई के समान लोचदार माँग (ed = 1)
4. बेलोच अथवा कम लोचदार मॉग (ed < 1)
5. पूर्णतया बेलोचदार माँग (ed = 0)

1. पूर्णतया लोचदार माँग

पूर्णतया लोचदार माँग –

जब किसी वस्तु की कीमत में कोई परिवर्तन न हो और उसकी माँग में अनन्त परिवर्तन हो जाए तो उस वस्तु की माँग पूर्णतया लोचदार कहलाती है।

(ed = ∞)

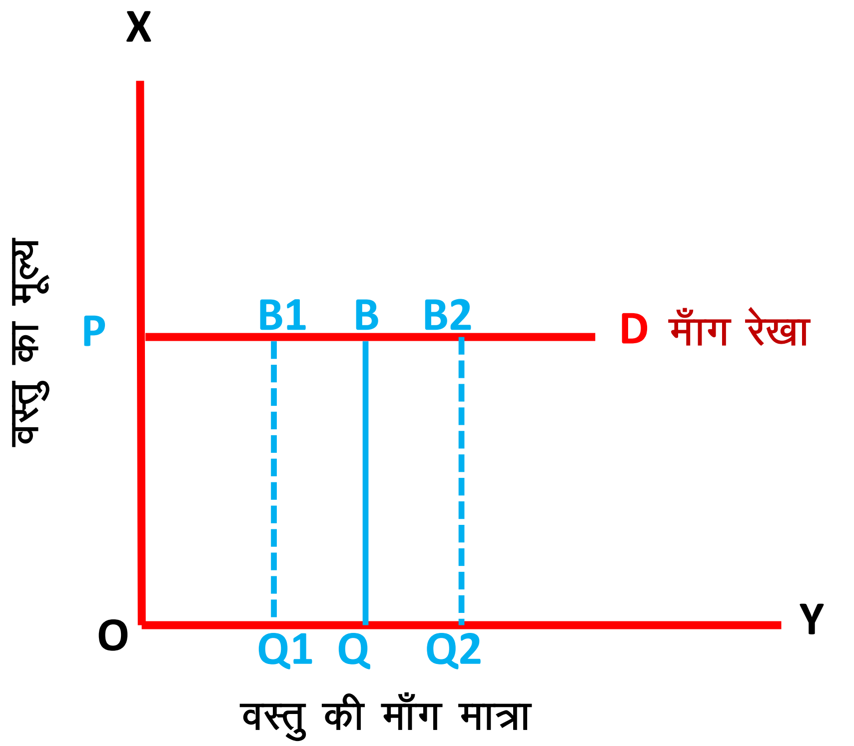

2. अधिक लोचदार माँग

अधिक लोचदार माँग –

जब किसी वस्तु कि माँग में होने वाला आनुपातिक परिवर्तन उसकी कीमत में होने वाले अनुपातिक परिवर्तन से अधिक होता है तो उस को अधिक लोचदार माँग कहते है।

(ed > 1)

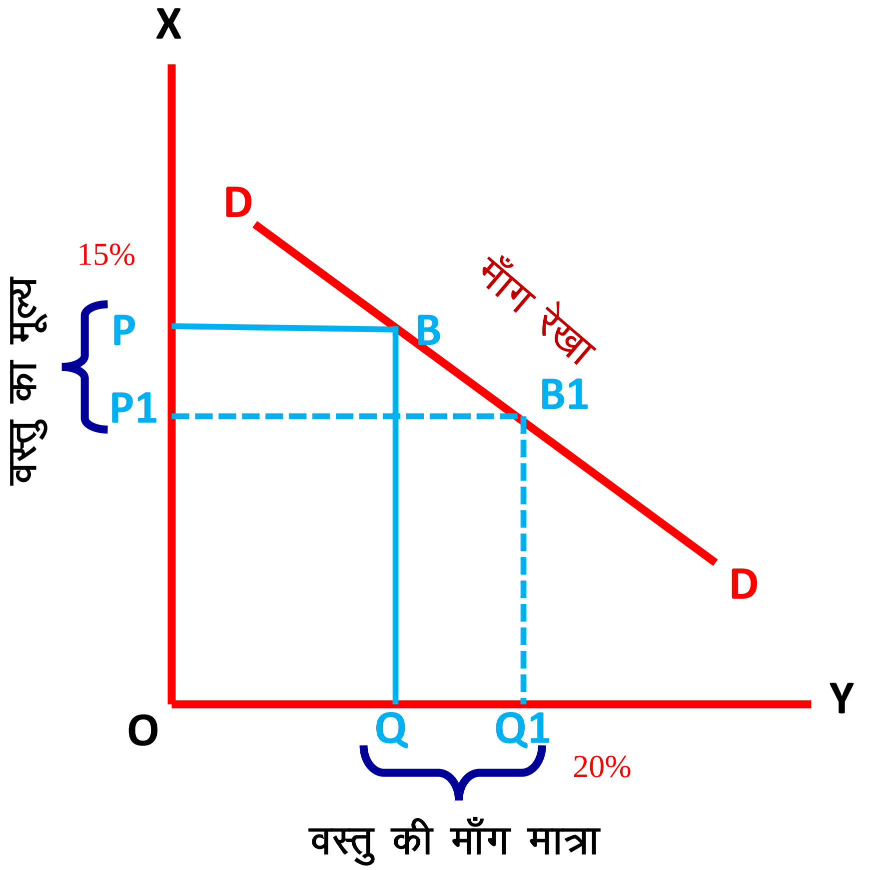

3. इकाई के समान लोचदार माँग

इकाई के समान लोचदार माँग –

जब किसी वस्तु कि माँग में उसी अनुपात में परिवर्तन होता है जिस अनुपात में उसकी कीमत में परिवर्तन होता है उस माँग को इकाई के समान लोचदार माँग कहते है।

(ed = 1)

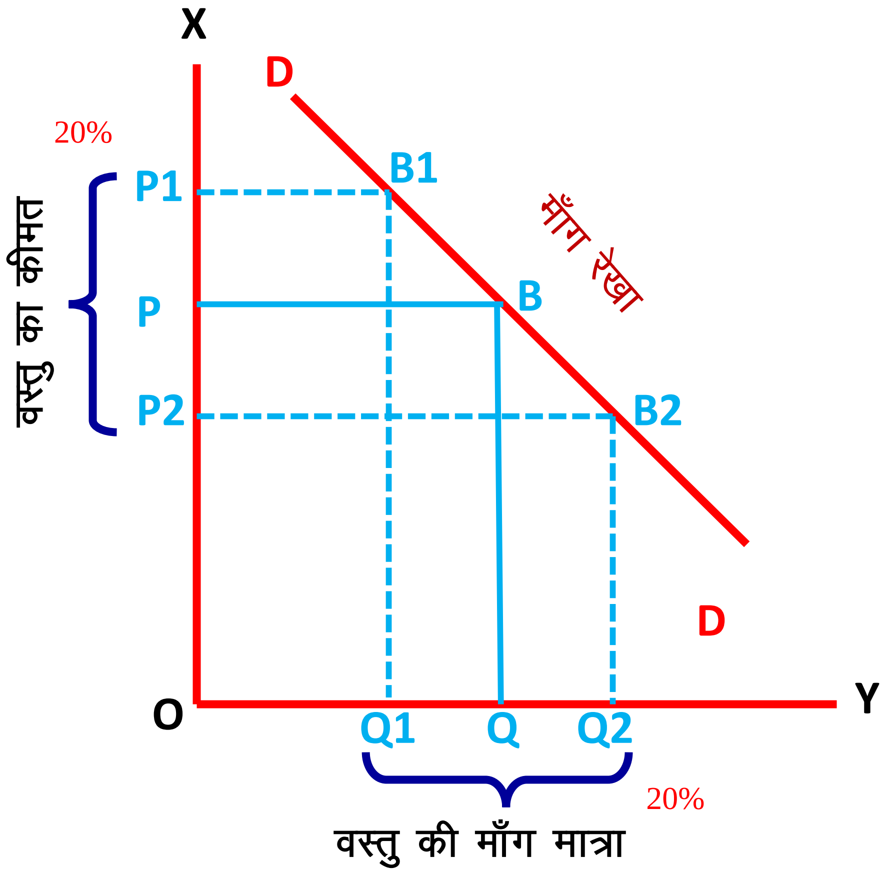

4. बेलोच अथवा कम लोचदार माँग

बेलोच अथवा कम लोचदार माँग –

जब किसी वस्तु कि माँग में होने वाला आनुपातिक परिवर्तन उसकी कीमत में होने वाले अनुपातिक परिवर्तन से कम होता है तो उस को बेलोच अथवा कम लोचदार माँग कहते है।

(ed < 1)

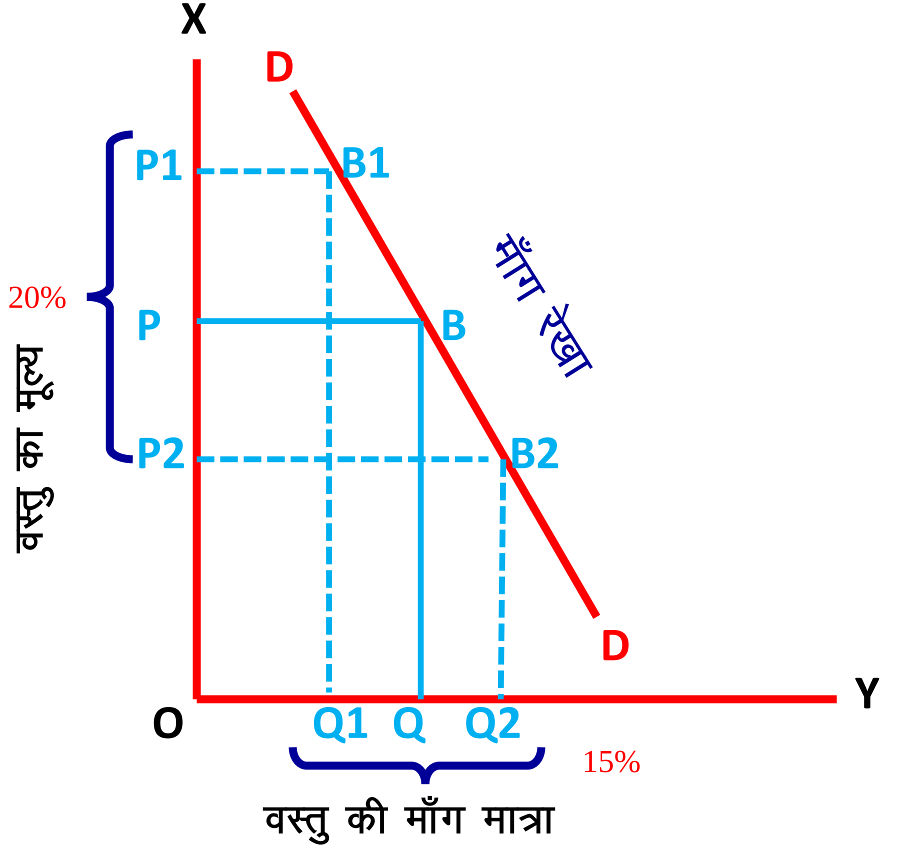

5. पूर्णतया बेलोचदार माँग

पूर्णतया बेलोचदार माँग –
जब किसी वस्तु कि कीमत में बहुत अधिक परिवर्तन होने पर भी वस्तु कि माँग में कोई परिवर्तन न हो तो उस पूर्णतया बेलोचदार माँग कहते है।

(ed = 0)

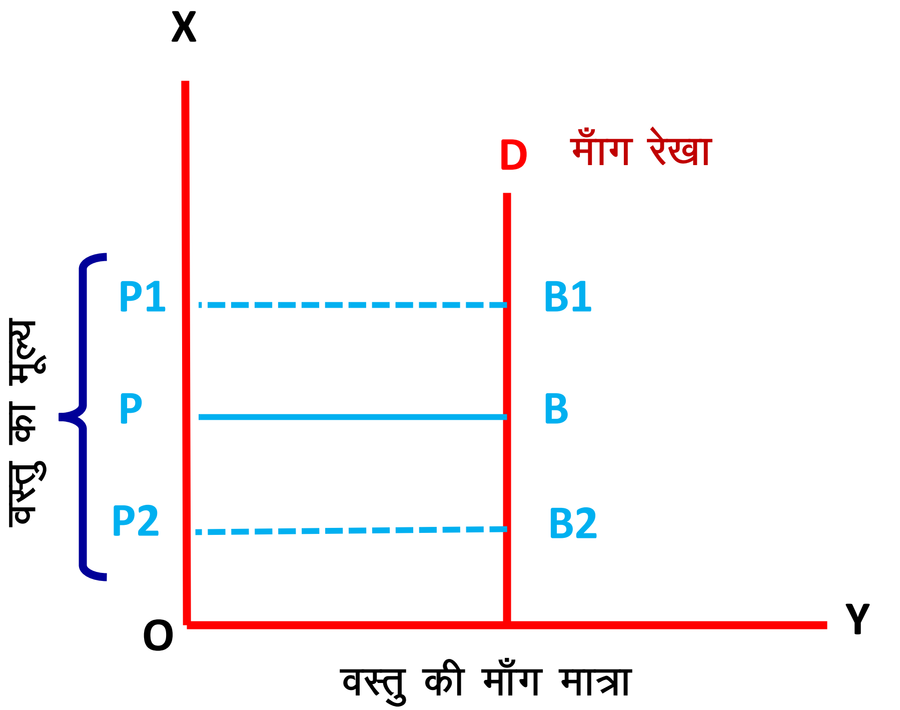

प्र04 माँग की मूल्य सापेक्षता (लोच) की माप की विधियों का वर्णन करे।

माँग की मूल्य सापेक्षता की माप की तीन विधियों है।

1. **मार्शल की कुल व्यय रीति** – इस विधि के अन्तर्गत मूल्य परिवर्तन से पहले और मूल्य परिवर्तन के बाद में कुल व्यय के परिवर्तनों की तुलना करके सम्बन्धित वस्तु की मूल्य सापेक्षता का अनुमान लगाया जाता है। इसे कुल व्यय रीति कहते है।

कुल व्यय = कीमत × माँग की मात्रा

यह तीन प्रकार की होती है।

a. माँग की मूल्य इकाई के बराबर ($e_D = 1$)
b. माँग की मूल्य इकाई से अधिक ($e_D > 1$)
c. माँग की मूल्य इकाई से कम ($e_D < 1$)

अभ्यास के प्रश्न

2. फ्लकस की प्रतिशत रीति – इस रीति के अन्तर्गत माँग में प्रतिशत परिवर्त की तुलना कीमत में हुऐं प्रतिशत परिवर्तन से की जाती है।

सूत्रानुसार

$$\text{माँग की मूल्य सापेक्षता } (e_D) = \frac{\text{माँग में प्रतिशत परिवर्तन}}{\text{कीमत में प्रतिशत परिवर्तन}}$$

$$= \frac{\dfrac{\text{माँग में परिवर्तन}}{\text{माँग में परिवर्तन से पूर्व मात्रा}}}{\dfrac{\text{कीमत में परिवर्तन}}{\text{परिवर्तन से पूर्व कीमत}}}$$

$$\frac{\triangle Q / Q}{\triangle P / P} = \frac{\triangle Q}{Q} \div \frac{\triangle P}{P}$$

$$\frac{\triangle Q}{\triangle P} \times \frac{P}{Q}$$

$\triangle$ = प्रतिशत

P = पूर्व माँग

Q = पूर्व कीमत

अभ्यास के प्रश्न

3. बिन्दु रीति – इस रीति से माँग रेखा के किसी बिन्दु पर माँग की लोच की गणना की जा सकती है। जिस बिन्दु पर माँग की लोच की गणना करनी हो, उस बिन्दु से नीचे वाले भाग को ऊपर वाले भाग से भाग देने पर माँग की लोच ज्ञात हो जाती है।

सूत्रानुसार

$$\text{माँग की लोच} = \frac{\text{स्पर्श रेखा से नीचे का भाग}}{\text{स्पर्श रेखा से ऊपर का भाग}}$$

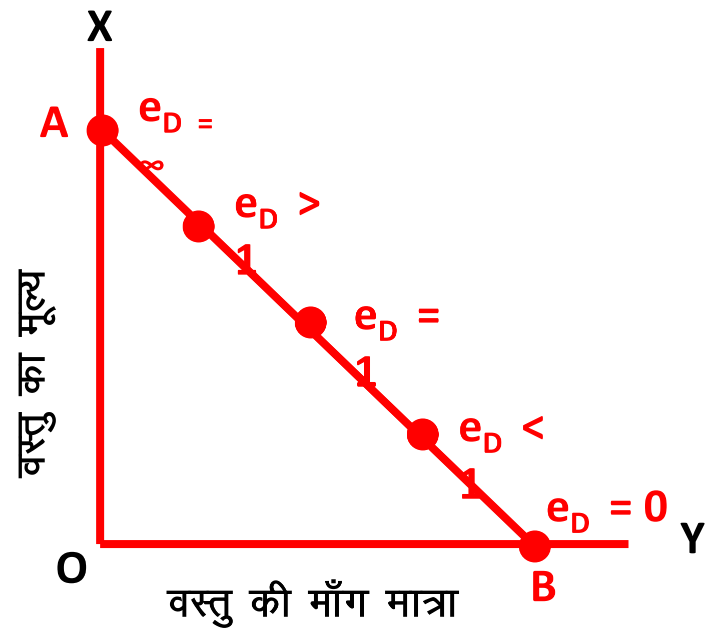

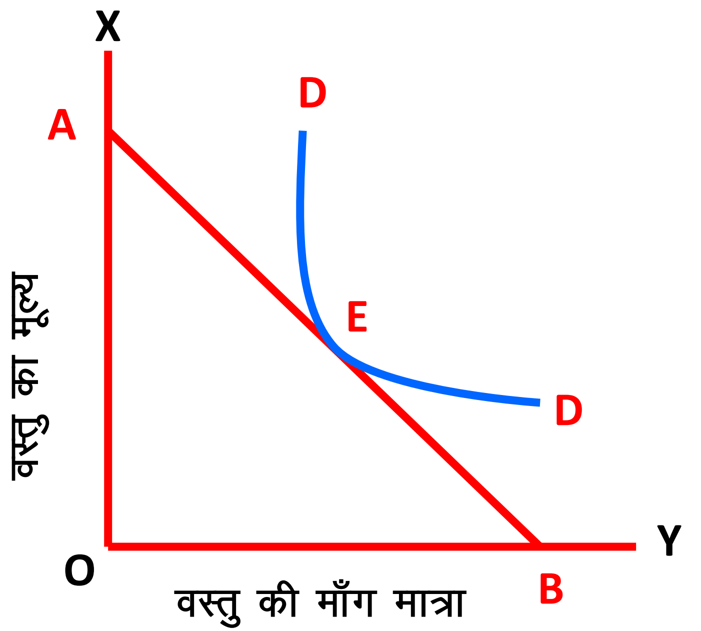

****

अभ्यास के प्रश्न

प्र05 माँग की मूल्य सापेक्षता (लोच) को प्रभावित करने वाले कारकों की विवेचना कीजिए।

माँग की मूल्य सापेक्षता को प्रभावित करने वाले कारक इस प्रकार है।

1. **वस्तु की प्रकृति** – सामान्यतः अनिवार्य (जैसे नमक, दाल, चावल आदि) वस्तुओं की माँग **मूल्य निरपेक्ष** होती है, और आरामदायक या विलासिता की वस्तुओं (जैसे–बिजली, स्कूटर, टीबी आदि)की माँग **अधिक मूल्य सापेक्ष** होती है।

2. **वस्तु के वैकल्पिक प्रयोग** – जिन वस्तुओं के वैकल्पिक प्रयोग सम्भव होते है, उनकी माँग अधिक **मूल्य सापेक्ष** होती है। जैसे – बिजली तथा दूध की माँग ।

अभ्यास के प्रश्न

3, **स्थानापन्न वस्तुएँ** – यदि किसी वस्तु की अनेक स्थानापन्न वस्तुएँ उपलब्ध होती है तो उनकी माँग **अधिक मूल्य सापेक्ष होगी,** क्योंकि वस्तु के मूल्य में वृद्धि होने पर उसकी स्थानापन्न वस्तुओं का उपयोग किया जाने लगेगा। इसके विपरीत जिस वस्तु की स्थानापन्न वस्तु उपलब्ध नहीं है तो उसकी **माँग निरपेक्ष** होगी।

4.**वस्तुओं की संयुक्त माँग** – संयुक्त रूप से माँग जाने वाली वस्तुओं (जैसे – कार–पेट्रोल, पेन–स्याही) में एक वस्तु की मूल्य सापेक्षता दूसरी वस्तु की मूल्य सापेक्षता पर निर्भर करती है। जैसे यदि पेन की माँग मूल्य निरेपक्ष है तो स्याही मी माँग भी मूल्य निरपेक्ष होगी।

5, **उपभोक्ता की आदत** – यदि उपभोक्ता किसी वस्तु–विशेष के प्रयोग का आदि हो गया है तो ऐसी वस्तु की माँग **मूल्य निरपेक्ष** होगी। जैसे – सिगरेट तथा शराब पीना, क्योंकि इन वस्तुओं की कीमत में वृद्धि होने पर भी इनकी माँग में कोई कमी नहीं होती है।

6. **उपभोक्ता के रहन–सहन का स्तर** – जिस समाज में लोगों का जीवन स्तर जितना ऊँचा होगी, वस्तुओं की माँग उतनी ही **कम मूल्य सापेक्ष** होगी। क्यों की धनी व्यक्यिों की माँग पर कीमत परिवर्तन का बहुत कम प्रभाव पड़ता है, क्यांकि वे ऊँची कीमत पर भी वस्तुओं को खरीदने में समर्थ होते है।

अभ्यास के प्रश्न

7, **उभोक्ता की आर्थिक स्थिति** – धनी लोगों की विलासिता वस्तुओं की माँग **मूल्य निरपेक्ष होती है,** जबकि इन्हीं वस्तुओं के लिए मध्यम व निधन वर्ग की माँग **अध्यधिक मूल्य सापेक्ष** होती है।

8. **समाज में धन का वितरण** – सामान्यतः जिस समाज में धन का असमान वितरण होने पर **माँग मूल्य निरपेक्ष होती है** और धन के समान वितण के साथ मूल्य सापेक्ष हो जाती है।

****

प्र06 स्थानापन्न तथा पूरक वस्तुओं में अन्तर कीजिए

1. **स्थानापन्न वस्तुएँ** – वे वस्तुएँ होती है जिनका किसी दूसरी वस्तु के स्थान पर प्रयोग किया जा सकता है। जैसे (**चाय और कॉफी**) चाय के स्थान पर कॉफी का प्रयोग किया जा सकता है।

2. **पूरक वस्तुएँ** – वे वस्तुएँ होती है जिनका उपयोग एक साथ किया जाता है। जैसे **पेन तथा स्याही।**

****

प्र07 उदासीनता वक्र को परिभाषित कीजिए तथा उसकी विशेषाताएँ बताईये। और उदासीनता मानचित्र को भी समझाइए।

उदासीनता वक्र की परिभाषा

उदासीनता वक्र दो वस्तुओं के ऐसे विभिन्न बण्डलों को प्रदर्शित करता है जिन पर सन्तुष्टि समान होती है।

विशेषाताएँ –

1. उदासीनता वक्र दाहिनी और नीचे को झुकता हुआ होता है।
2. उदासीनता वक्रों का एक–दूसरे के समानान्तर होना आवश्यक नहीं है।
3. उदासीनता वक्र मूल बिन्दु की और उन्नतोदर हुआ होता है।
4. उदासीनता वक्र एक–दूसरे को नहीं काटते।
5. उदासीनता वक्र मूल बिन्दु के जितना निकट होता है तो छोटे संयोगों को तथा दूर होने पर बड़े बण्डलों को प्रकट करता है।

अभ्यास के प्रश्न

उदासीनता मानचित्र

जब किसी उपभोक्ता को प्राप्त सन्तुष्टि के विभिन्न स्तरों को एक साथ प्रदर्शित किया जाता है तो वह तटस्थता मानचित्र कहलाता है।

उदासीनता मानचित्र की महत्वपूर्ण बातें

1. किसी एक तटस्थता वक्र पर स्थित सभी बिन्दु उपभोक्ता को समान सन्तुष्टि प्रदान करते है।
2. दो विभिन्न वक्रों पर मिलने वाली सन्तुष्टि अलग–अलग होगी।
3. जो वक्र मूल बिन्दू O से जितना दूर होता जायेगा उससे मिलने वाली सन्तुष्टि बढ़ती जाएगी।

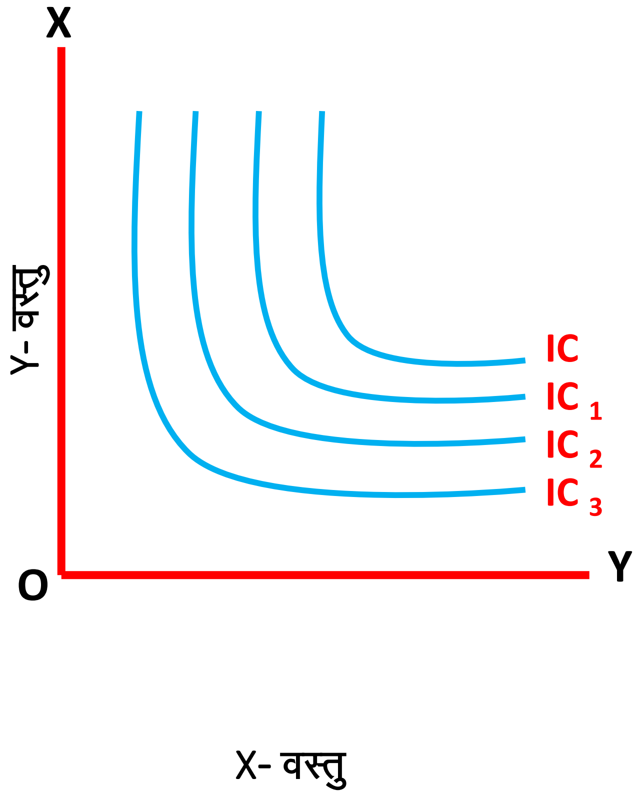

****

अभ्यास के प्रश्न

प्र 8 सीमांत उपयो गता ह्रास नियम की व्याख्या कीजिए तथा इसके महत्व एवं सीमाओं को भी समझाइए ? Or
प्र0 रेखा चत्र दवारा प्रद र्शत कीजिए की कुल उपयो गता तब अ धकतम होती है जब सीमांत उपयो गता शून्य हो ? Or
प्र0 धटती सीमान्त उपयो गता का नियम अर्थशास्त्र का एक आधारभूत एवं सार्वभौ मक नियम है। व्याख्या कीजिए ?

उ0 मनुष्य की आवश्यकताएं असी मत होती हैं तथा उनको पूरा करने वाले संसाधन सी मत होते हैं जिसके कारण कसी आवश्यकता वशेष को ही एक समय पर संतुष्ट कया जा सकता है आवश्यकताओं की इसी वशेषता पर सीमांत उपयो गता ह्रास नियम आधारित है प्रोफेसर मार्शल ने इस नियम को वैज्ञानिक आधार दिया था।

मार्शल की परिभाषा के अनुसार " कसी व्यक्ति के पास वस्तु वशेष के स्टॉक में एक भी हुई मात्रा में वृद् ध होने पर उसे जो अतिरिक्त लाभ प्राप्त होता है वह स्टॉक में होने वाली प्रत्येक वृद् ध के साथ घटता जाता है" ।

अभ्यास के प्रश्न

ता लका एवं रेखा चत्र द्वारा स्पष्टीकरण –

रोटी की इकाइयां	प्राप्त सीमांत उपयो गता (इकाइयों में)	कुल उपयो गता (इकाइयों)
1	8	8
2	7	15
3	5	20
4	3	23
5	1	24
6	0 शून्य उपयो गता	24 पूर्ण संतुष्टि का बिंदु
7	-2 ऋणात्मक उपयो गता	22 कुल उपयो गता घटते हुए क्रम में

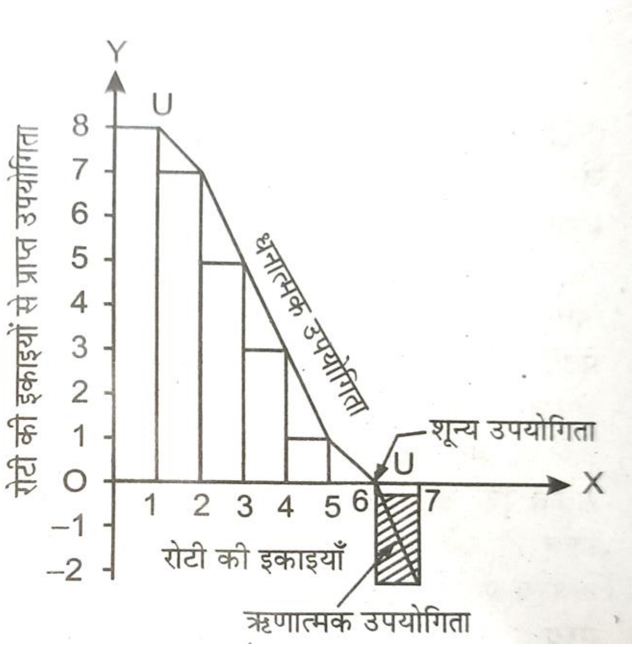

रेखा चत्र द्वारा व्याख्या - रेखा चत्र के अनुसार **OX** पर रोटी की इकाइयां तथा **OX** पर उससे प्राप्त उपयो गता को दिखाया गया है ता लका से स्पष्ट है रोटी की प्रथम इकाई से उपयो गता **8** इकाई के बराबर प्राप्त होती है जैसे जैसे रोटी की एक से अ धक इकाइयों का उपयोग कया जाता है वैसे वैसे उपयो गता घटती जाती है **6** इकाई पर सीमांत उपयो गता शून्य हो जाती है यही पूर्ण संतुष्टि का बिंदु कहलाता है इससे अ धक रोटी उपभोग करने पर सातवीं इकाई उपभोक्ता को (अनुपयो गता) ऋणात्मक प्राप्त होने लगती है

अभ्यास के प्रश्न

नियम का महत्व

यह नियम व भन्न वस्तुओं के उत्पादन को प्रोत्साहन देता है। यह नियम मांग के नियम पर आधारित है। यह नियम सम सीमांत उपयो गता नियम का आधार है। यह नियम उपभोक्ता की बचत का आधार है। यह नियम जीवन स्तर एवं कार्य क्षमता के संबंध की व्याख्या करता है। यह नियम प्रगतिशील कर प्रणाली उपभोक्ता उत्पादक एवं वत्त मंत्री के लए महत्वपूर्ण है।

नियम की सीमाएं

यह नियम निम्न ल खत दशाओं में लागू नहीं होता जब उपभोग की कोई वस्तु की इकाई बहुत छोटी हो, जब उपभोक्ता की मान सक स्थिति सामान्य ना हो, जब इच्छा दुर्लभ वस्तुएं, मुद्रा आदि के संचय करने की हो आदि।

आंकिक के प्रश्न

प्र0 1. एक उपभोक्ता एक वस्तु रू0 3 प्रति इकाई कीमत होने पर वस्तु की 40 इकाई की खरीद करता है। अगर कीमत बढ़कर रू0 4 प्रति इकाई हो जाने पर वस्तु की खरीद धटकर 30 इकाई हो जाती है। कुल व्यय विधि से गणना करते हुए माँग की कीमत लोच बताइए।

हल

पूर्व कीमत = रू0 3 प्रति इकाई
क्रय मात्रा = 40 इकाई
कुल व्यय = रू0 3 × 40 प्रति इकाई = रू0 120 इकाई
नई कीमत = रू0 4 प्रति इकाई
क्रय मात्रा = 30 इकाई
कुल व्यय = रू0 4 × 30 प्रति इकाई = रू0 120 इकाई

सूत्र

कुल व्यय – कीमत × माँग की मात्रा

दोनों ही दशाओं में कुल व्यय स्थिर है, अतः माँग की कीमत लोच इकाई के बराबर है।

$e_D = 1$

आंकिक के प्रश्न

प्र0 2. एक उपभोक्ता एक वस्तु रू0 6 प्रति इकाई कीमत होने पर वस्तु की 50 इकाई की खरीद करता है। अगर कीमत बढ़कर रू0 8 प्रति इकाई हो जाने पर वस्तु की खरीद धटकर 40 इकाई हो जाती है। कुल व्यय विधि से गणना करते हुए माँग की कीमत लोच बताइए।

हल

सूत्र

कुल व्यय – कीमत × माँग की मात्रा

पूर्व कीमत = रू0 6 प्रति इकाई
क्रय मात्रा = 50 इकाई
कुल व्यय = रू0 6 × 50 प्रति इकाई = रू0 300 इकाई
नई कीमत = रू0 8 प्रति इकाई
क्रय मात्रा = 40 इकाई
कुल व्यय = रू0 8 × 40 प्रति इकाई = रू0 320 इकाई

दोनों ही दशाओं के अनुसार माँग की कीमत लोच इकाई से अधिक है।
$e_D > 1$

आंकिक के प्रश्न

प्र0 3. निम्न तालिका से एक रेखाचित्र का निर्माण कीजिए तथा सन्तुलन कीमत प्रदर्शित कीजिए।

कीमत (रू0 में)	10	15	20	25	30
माँग (इकाई में)	100	80	60	40	20
पूर्ति (इकाई में)	20	40	60	80	100

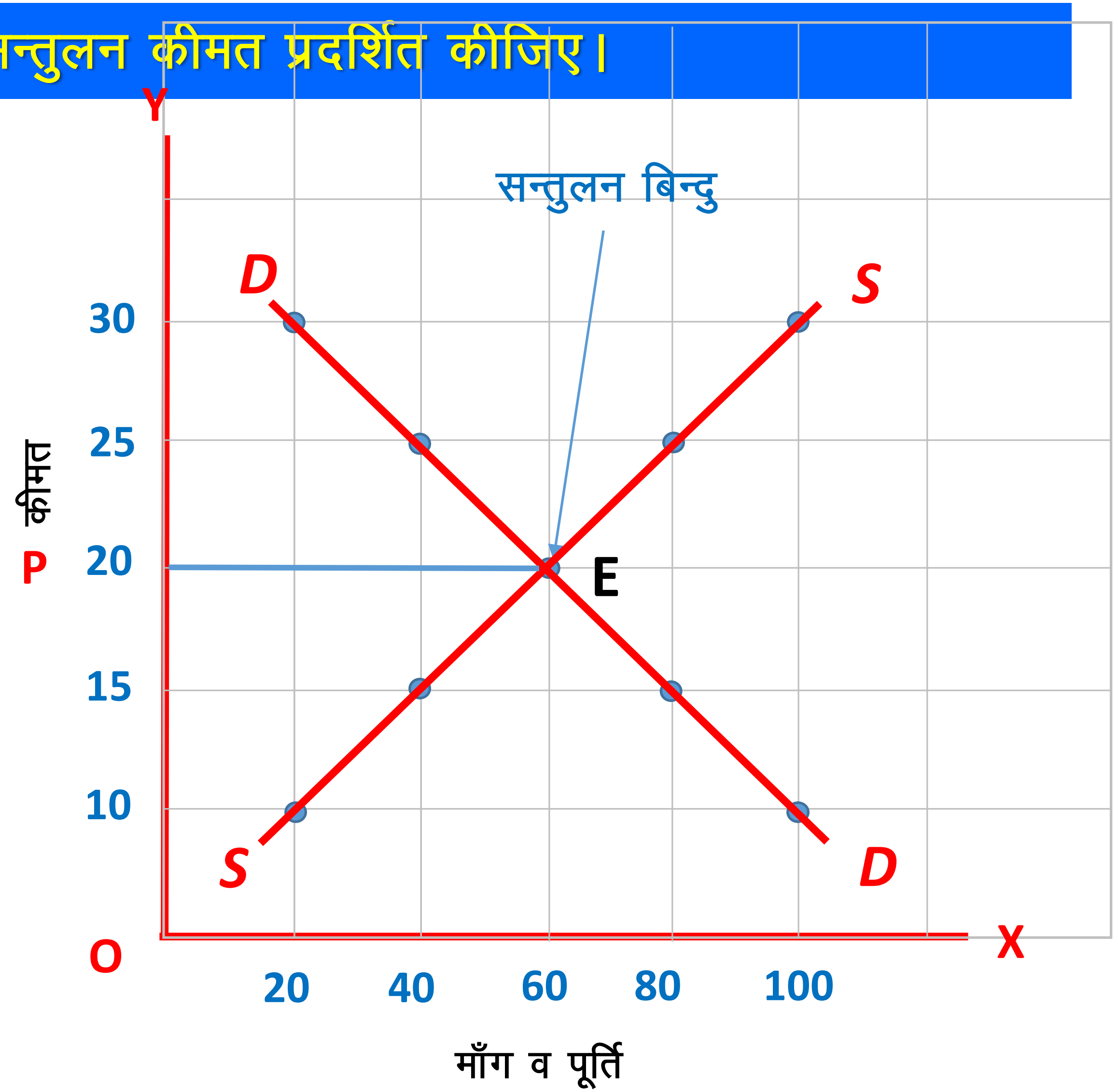

सन्तुलन कीमत PE है जहाँ सम्पूर्ण माँग सम्पूर्ण के बराबर है।

अत: सन्तुलन कीमत = रू0 20 है।

अभ्यास के प्रश्न

VIDEO

Please Click to Open

Please Click to Open

विद्यार्थी दिये हुये लिंक पर जा कर अध्याय से संम्बन्धित वीडियो देख सकते है।

STUDENT’S ACTIVITY

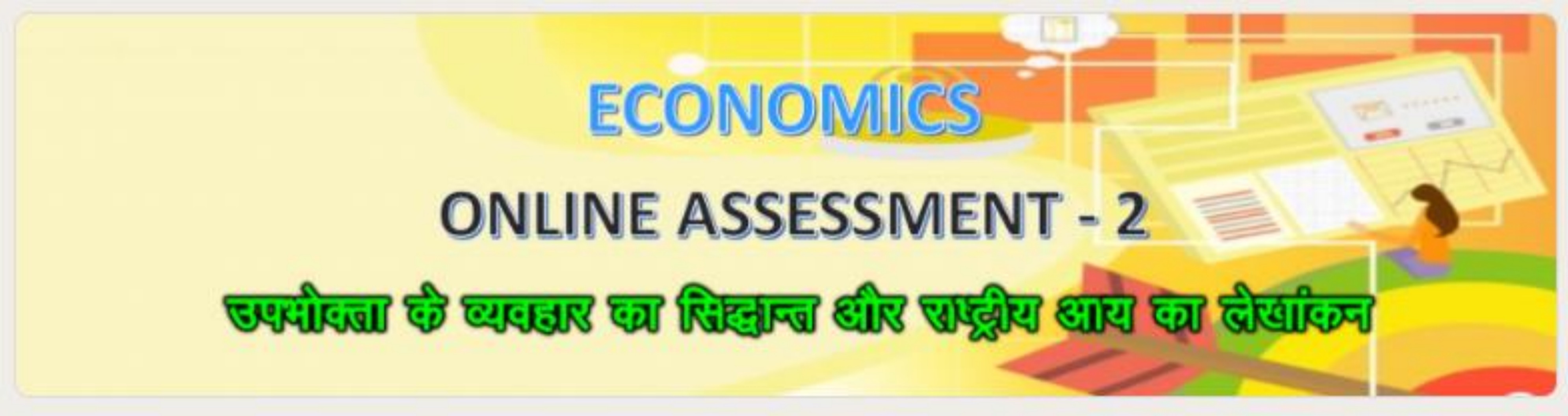

https://forms.gle/WYqzFP14ENTf33GB6

विद्यार्थी दिये हुये लिंक पर जा कर अपना स्वंय का मूल्यॉकन कर सकते है।

Explore me

Subscribe to my

YouTube Channel

Pradeep Negi

Mr. Pradeep Negi
Lecturer – Economics
School – Govt. Inter College BHEL, Hardwar Uttrakhand, INDIA
Mob – 9720893445

- ✓ *Head of ICT Department, Model School GIC BHEL Hardwar Uttrakhand*
- ✓ *KEY Resource Person (ICT) of NCERT, CIET New Delhi and SCERT Uttrakhand*
- ✓ *Microsoft Innovative Educator 2017 & 2018*
- ✓ *Google Certified Educator 2014*
- ✓ *Achievements – National ICT Awardee 2013, Top 50 finalist Global Teacher Price 2018*
- ✓ *SDG Global Ambassador & VTA (Varkey Teacher Ambassador)*
- ✓ *Disable Person Ambassador of District (Election Commission of India 2019)*

Email – pradeepnegieconomics@gmail.com
Blog – http://pradeepnegieconomics.blogspot.com (learning activity for students)
Web – http://learningadvanceeconomics.weebly.com (Learning activity for students)
Web - http://exploring-e-economic.weebly.com (Learning e-economics in Hindi)
Web – http://pradeepnegi.weebly.com (My Profile)
Web - http://pradeepnegieconomics.wikispaces.com (Students Project Activity)
Web - http://modelgicbhelhardwar.weebly.com (Creating School Web site)
Web - https://www.youtube.com/channel/UCHro0wUNrNAC2ImYf4hjFhQ (YouTube Channel

Thanks